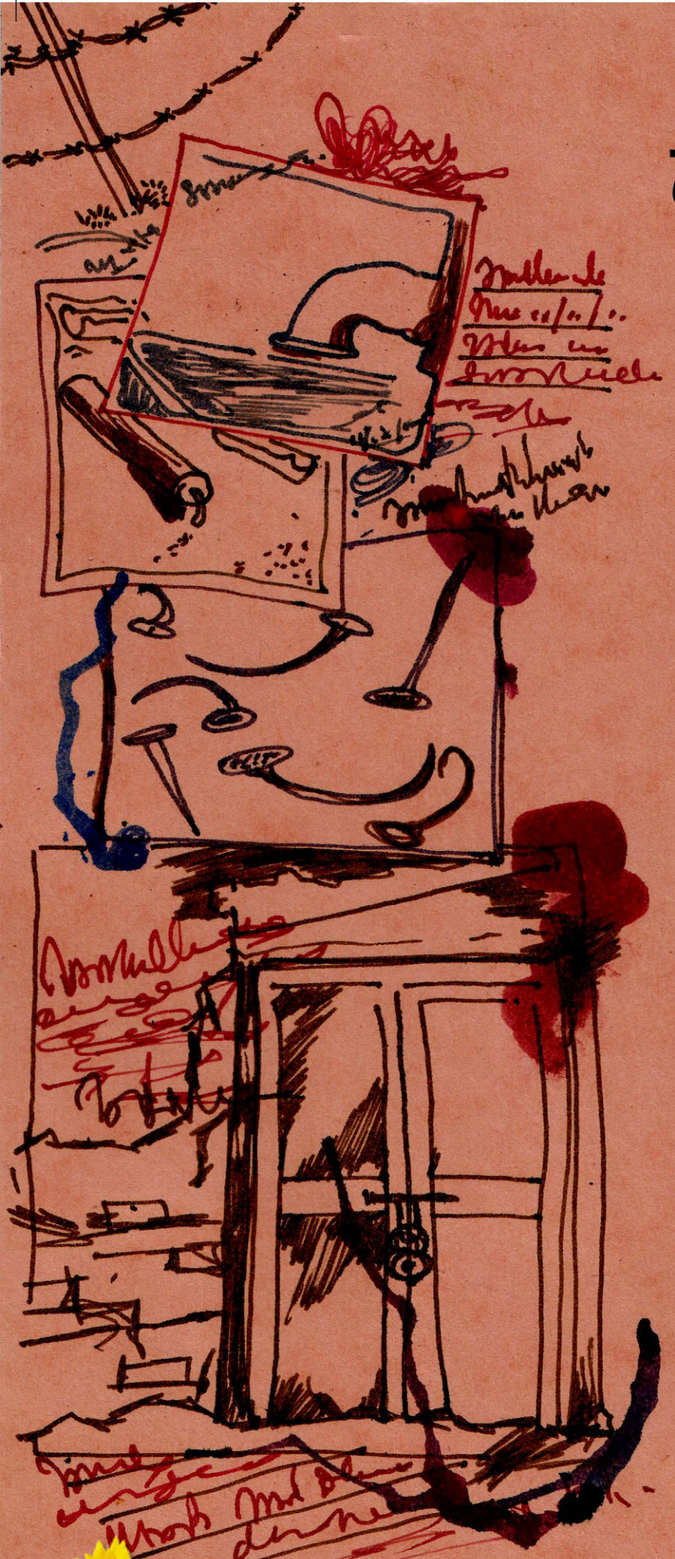

एक खत...

चकमक पढ़ने वाले मेरे प्रिय मित्रो,

मैं अपने खत में आज तुम को एक और खत के बारे में बताना चाहती हूँ। यह खत मेरे एक बर्तानवी मित्र ऐलन लदाक ने रामचन्द्र गाँधी को लिखा था। वे गाँधीजी के पौत्र थे। ऐलन से मेरे घर का पता खो गया था और वे मेरे कई मित्रों को खत लिखकर पूछ रहे थे। उन्हीं में से एक रामू भी थे। पश्चिमी देशों से जब सैलानी भारत में घूमने के लिए आते हैं तो तुमने देखा होगा वे मन्दिरों, जटाधारी साधुओं, कुपोषित बच्चों, या कभी-कभी तो जलती हुई चिताओं तक के चित्र खींचने लगते हैं। लेकिन मेरे मित्र ऐलन बिल्कुल मामूली चीज़ों के चित्र खींचते थे जिससे उस मामूली-सी चीज़ में जादू जैसा भर जाया करता था। जैसे कई रेलवे प्लेटफॉर्मों पर लगे लोहे के मोटे-मोटे नल या किसी टूटी-फूटी और हर तरफ से खुली हुई इमारत के दरवाज़े पर पड़े बड़े-बड़े जंग लगे ताले। कभी जंग लगी कीलों पर तो कभी एक अकेले फूटे हुए पटाखे पर ऐलन देर तक अपने कैमरे की आँख टिकाए रखते।

ऐलन ने जो खत रामू गाँधी को लिखा था उसमें उन्होंने बीकानेर स्टेशन पर हुई एक सुन्दर घटना का वर्णन इस प्रकार किया था:

मैं स्टेशन पर बैठ गाड़ी का इन्तज़ार कर रहा था। संयोग से स्टेशन के दो अलग-अलग दरवाज़ों से एक ही समय लाठी टेकते हुए दो व्यक्तियों ने प्रवेश किया। प्लेटफॉर्म पर पहुँचकर वे दिशा का अनुमान लगाते हुए एक-दूसरे की ओर चलने लगे। सहसा वे आपस में टकरा गए। उन्हें यह समझने में ज़रा समय लगा कि सामने वाले व्यक्ति की भी दृष्टि नहीं है। रामू, मैं नहीं जानता कि वे एक-दूसरे को जानते थे या नहीं, लेकिन टकरा जाने के बाद जब उन्होंने स्थिति को भाँप लिया तो उन्होंने एक-दूसरे को गले से लगाया और चुपचाप कुछ क्षण यूँ ही खड़े रहे।

यकीन मानिए, रामू, वह मेरे जीवन का एक अद्‌भुत क्षण था। मैंने सोचा, कि यह घटना केवल भारत जैसे देश में ही घट सकती है।

मेरे मित्र ऐलन की माँ इंग्लैण्ड की रहने वाली थीं और ऐलन के पिता भारत के एक मुस्लिम परिवार के थे। ऐलन जब पहली बार भारत आए थे तो उनसे मेरी मुलाकात राजस्थान में हुई थी। वे भारत क्यों आए थे? वे हर किसी को यह नहीं बताते थे। उनके पिता भारत छोड़ इंग्लैण्ड में बस गए थे और ऐलन जब पाँच ही बरस के हुए थे कि उनके अब्बाजान को कैंसर हो गया था। अम्मी जो भी अब्बा के बारे में कहती थीं, उससे नन्हा ऐलन समझ नहीं पाता था कि अब्बा अच्छे हैं या बुरे। अम्मी अब्बा से मिलने अस्पताल जातीं तो ऐलन नीचे खड़े होकर छठवीं मंज़िल की उस खिड़की को देखता रहता जो अब्बा के वॉर्ड की खिड़की थी। अम्मी ऐलन को अस्पताल के अन्दर नहीं ले जाना चाहती थीं। बड़े होने पर अब्बाजान को याद करने पर बस अस्पताल की वही खिड़की ऐलन को याद आती, जिसे वे गली में खड़े होकर देखा करते थे।

बार-बार भारत की यात्रा करने आते मेरे मित्र ऐलन यह मानते थे कि इन यात्राओं से उन्हें अपने पिता के बारे में सोचने में मदद मिलती है। मुझे नहीं पता ऐलन इन दिनों कहाँ हैं, न ही हमारे मित्र रामू गाँधी ही अब जीवित हैं जो बिछुड़े हुए मित्रों को आपस में मिलवा दिया करते थे।

इस पूरी कहानी की याद मुझे खूब आती है, और साथ-साथ हमारे प्यारे रामू की भी और इस याद के साथ ही एक विचित्र ढंग से अपने पिता को ढूँढते हुए ऐलन की भी।

- तेजी ग्रोवर

चित्र- कनक